हमारो धन परमधन जीवनधन गोवर्धन महाराज

हमारो धन, परमधन, जीवनधन गोवर्धन महाराज,
जो मांगो सो देवे दाता, बड़ो गरीब नवाज़ ॥

नंद-नंदन स्वरूप गोवर्धन, ब्रजमंडल की शांन ।
इन्द्र को इन्द्र, देव देवन को, साक्षात भगवान ।।
महिमा अपरम्पार गोवर्धन, संत भगत गुण गात
हमारो धन...

पूर्व में श्री जगन्नाथ जी, पश्चिम द्वारिकानाथ ।
रामेश्वर दक्षिण दिशा में, उत्तर में बद्रीनाथ ।।
इन चारों के बीच सुशोभित, श्री गोवर्धन नाथ
हमारो धन...

जगत-वासना, राग-द्वेष अरु दुःख दारिद्र टारे ।
भक्ति ज्ञान विवेक बढ़ावे, प्रेम रंग रंग डारे।।
मानसी-गंगा में कर पावन, रास लीला दिखलात
हमारो धन...

कभी भारी कभी फूल सों हलका, चमत्कार अति न्यारे ।
अति सुन्दर अदभुत अलौकिक, 'मधुप' हरि बलिहारे ।।
वंशी नाद गोपाल करत जहां, चरत गो-बछड़े घास
हमारो धन...

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण **'मधुप'** (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/36902/title/hamaro-dhan-param-dhan-jeevandhan-Govardhan-maharaj

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |